



भारतीय परम्पराTM

Let's together discover our Tradition, Culture & Heritage

वर्ष-४, अंक-४३, फरवरी-२०२५

महोकुम्भ

www.bhartiyaparampara.com



संपादक
प्रीति माहेश्वरी


प्रकाशन स्थल
मुम्बई


डिजाइनिंग टीम
MX CREATIVITY

सोशल कनेक्शन



हमसे जुड़ने के लिए आइकन पर स्पर्श करें

 www.bhartiyaparampara.com

 paramparabhartiya@gmail.com

मूल्य

आपका कीमती समय

साका कैलेण्डर-१९४५, विक्रम संवत्-२०८१, अयान-दक्षिणायन, ऋतु-शिशिर

सोम

03 माघ शु.
षष्ठी,
स्कन्द षष्ठी

10 माघ शु.
त्रयोदशी,
प्रदोष व्रत

17 फाल्गुन कृ.
पंचमी

24 फाल्गुन कृ.
एकादशी,
विजया
एकादशी व्रत

मंगल

04 माघ शु.
सप्तमी, विश्व
कैंसर दिवस,
नर्मदा जयंती

11 माघ शु.
चतुर्दशी

18 फाल्गुन कृ.
षष्ठी

25 फाल्गुन कृ.
द्वादशी,
प्रदोष व्रत

बुध

05 माघ शु.
अष्टमी, मासिक
दुर्गाष्टमी

12 माघ शु.
पूर्णिमा,
पूर्णिमा व्रत

19 फाल्गुन कृ.
षष्ठी

26 फाल्गुन कृ.
त्रयोदशी,
महा शिवरात्रि

गुरु

06 माघ शु.
नवमी

13 फाल्गुन कृ.
प्रतिपदा

20 फाल्गुन कृ.
सप्तमी

27 फाल्गुन कृ.
चतुर्दशी/
अमावस्या

शुक्र

07 माघ शु.
दशमी,
रोहिणी व्रत

14 फाल्गुन कृ.
द्वितीया

21 फाल्गुन कृ.
अष्टमी, मासिक
कृष्ण जन्माष्टमी,
कालाष्टमी

28 फाल्गुन शु.
प्रतिपदा

शनि

01 माघ शु.
तृतीया/चतुर्थी,
वरद/ कुन्द
चतुर्थी

08 माघ शु.
एकादशी, जया
एकादशी व्रत

15 फाल्गुन कृ.
तृतीया

22 फाल्गुन कृ.
नवमी

रवि

02 माघ शु.
पंचमी,
बसंत पंचमी

09 माघ शु.
द्वादशी

16 फाल्गुन कृ.
चतुर्थी, द्विजप्रिय
संकष्टी चतुर्थी

23 फाल्गुन कृ.
दशमी

कृ. - कृष्ण शु. - शुक्ल



नारी के रूप में परिवर्तित हो गया। यह चतुर्भुज रूप था। जैसे ही वीणा ने नाद किया, जीव जंतुओं में वाणी तथा प्रकृति में कोलाहल उत्पन्न हुआ।

बसंत लोगों का मनचाहा मौसम है। फूलों पर बहार, खेतों में पीली सरसों के फूल, गेहूं की बालियाँ खिलने लगती हैं, आम पर बोर आने लगते हैं, फूलों पर भौरे तथा तितलियाँ गुंजन करते हैं।

हमारी भारतीय संस्कृति उत्सवप्रिय तथा उल्लासमयी है। हमारी संस्कृति में साधारणतः ऋतु परिवर्तन के समय कोई ना कोई उत्सव तथा त्यौहार मनाये जाते हैं। बसंत पंचमी शीत ऋतु तथा ग्रीष्म ऋतु के सन्धिकाल में होती है। उस समय मौसम सुहाना होता है। इस दिन विशेषकर माँ सरस्वती का पूजन किया जाता है। **सरस्वती के पूजन का प्रमुख कारण उनका प्राकट्य दिवस है।**

इस दिन विष्णु तथा कामदेव की पूजा भी होती है। सुहावने मौसम में लोग पूरी तरह से प्रसन्न होकर प्रकृति के साथ तादम्य स्थापित करने के लिए पीले वस्त्र पहन कर उल्लासित होते हैं। आकाश पतंगों से भर जाता है। इस दिन पतंगबाजी की प्रतियोगिताएँ भी आयोजित होती हैं।

सृष्टिकर्ता ब्रह्मा ने सृष्टि की रचना की तदुपरांत भ्रमण किया, तब सृष्टि पूर्णतः शांत थी। चारों तरफ नीरवता फैली हुई थी। ब्रह्मा जी को यह पसंद नहीं आया उन्होंने भगवान विष्णु के समक्ष यह समस्या रखी। निवारण के लिए **विष्णु जी ने माँ आदिशक्ति दुर्गा का आह्वान किया, माँ तुरन्त प्रकट हुई तब विष्णु जी ने यह समस्या उनके सामने रखी। माँ आदिशक्ति के शरीर से श्वेत रंग का भारी तेज उत्पन्न हुआ जो तुरंत**

इस दिन विद्यालयों में भी विद्या की देवी माँ सरस्वती का पूजन होता है तथा **शिशुओं को विद्या अध्ययन प्रारंभ भी इसी दिन से कराया जाता है।**

बसंत पंचमी का यह त्यौहार समस्त भारत में मनाया जाता है।

- श्रीमती उषा चतुर्वेदी जी, भोपाल (म. प्र.)

बसंत ऋतु

पीतांबर को धारण कर, देखो बसंत आया है
कोहरे से आच्छादित
शीत से ठिठुर रही धरती
पर भी यौवन आया है

पीतांबर को धारण कर, देखो बसंत आया है

माँ वाणी की वीणा से
झंकृत हुई धरणी है
माँ वीणा वादनी तलक
बसन्ती ओज आया है

पीतांबर को धारण कर, देखो बसंत आया है

धानी लहंगा पीत चुनर
रमणी प2 बसन्त छाया
सुरभि और खिलती कलियों से
निरखी भू की काया

पीतांबर को धारण कर, देखो बसंत आया है।

- श्रीमती उषा चतुर्वेदी जी, भोपाल (म. प्र.)



अगर आप अपने 
'शब्दों के मोती'

भारतीय परम्परा
की माला में पिरोना

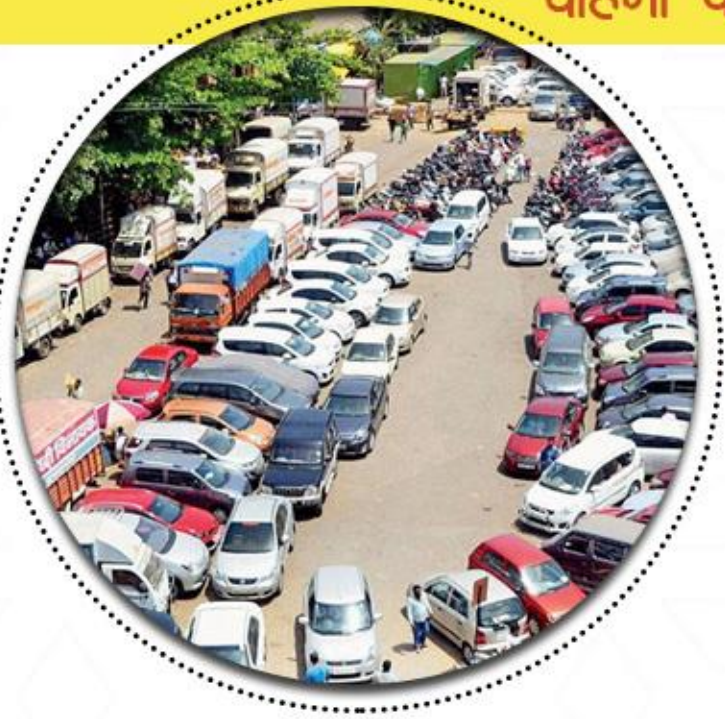
चाहते हैं तो हमें सम्पर्क करें!

आपका लेख वेबसाइट
पर भी प्रकाशित किया जायेगा



paramparabhartiya@gmail.com





केंद्रित किया गया है।

भारत में वाहन पार्किंग की समस्या एक महत्वपूर्ण शहरी चुनौती है, जो न केवल यातायात के प्रवाह को प्रभावित करती है, बल्कि शहरी जीवन के मूल ढांचे को भी प्रभावित करती है। यह समस्या, तेजी से बढ़ते शहरीकरण, बढ़ते वाहन स्वामित्व और पुरानी शहरी नियोजन के संयोजन से उत्पन्न होती है, जो महानगरीय क्षेत्रों में यातायात प्रबंधन, शहरी नियोजन और जीवन की गुणवत्ता के लिए एक जटिल दुविधा पैदा करती है। शहरों के विस्तार और कार स्वामित्व के अधिक सुलभ होने के साथ, भारतीय शहरी केन्द्रों को वाहनों की बढ़ती संख्या को समायोजित करने में संघर्ष करना पड़ रहा है। पर्याप्त पार्किंग इंफ्रास्ट्रक्चर की कमी और आज के समय में वाहनों की संख्या के हिसाब से शहरों को डिज़ाइन न किए जाने के कारण बड़े पैमाने पर अवैध पार्किंग होती है। इससे न केवल सड़कें जाम होती हैं, बल्कि पैदल चलने वालों के लिए बनी जगह भी कम पड़ जाती है। कई भारतीय शहरों की स्थापना प्राचीन या औपनिवेशिक काल में हुई थी, लेकिन उनकी योजना आधुनिक यातायात की मांग को ध्यान में रखकर नहीं बनाई गई थी। संकरी गलियाँ और मिश्रित भूमि उपयोग के कारण पार्क किए गए और चलते वाहनों के

यह ज़रूरी नहीं है कि अच्छा सार्वजनिक परिवहन यातायात की भीड़ को काफी कम कर दे। भीड़भाड़ की स्थिति में सुधार करने के लिए, शहरों को निजी कारों के स्वामित्व और उपयोग के कार्यात्मक, मनोवैज्ञानिक और सांस्कृतिक मूल्यों को लक्षित करने वाली गतिविधियों के साथ ही अपनी सार्वजनिक परिवहन प्रणालियों को बेहतर बनाने के प्रयासों को मिलाकर काम करना होगा। वाहनों की भीड़ और अपर्याप्त पार्किंग सुविधाएँ भारत के बड़े और महानगरीय शहरों के लिए लगातार बड़ी हो रही चुनौतियाँ हैं, जिनकी वज़ह से गतिशीलता गंभीर रूप से प्रभावित हो रही है। संवैधानिक आदेशों की वज़ह से सीमित होने के बावजूद, कई भारतीय शहर पार्किंग नीतियों के माध्यम से इस समस्या को हल करने की कोशिश कर रहे हैं, जिसमें विनियमन, प्रबंधन के एक उपकरण के रूप में मूल्य निर्धारण, नई तकनीक और सड़क से इतर (ऑफ-स्ट्रीट) पार्किंग प्रावधानों पर ध्यान

भारत से दबाव पड़ता है। इसके अतिरिक्त, पार्किंग नियमों का ढीला-ढाला क्रियान्वयन तथा गैर-अनुपालन के प्रति सांस्कृतिक प्रवृत्ति स्थिति को और बिगाड़ देती है, जिससे शहरी स्थान अव्यवस्थित हो जाते हैं।

पार्किंग की समस्या का सीधा परिणाम गंभीर यातायात भीड़ है, जिसके कारण यात्रा का समय बढ़ जाता है, प्रदूषण का स्तर बढ़ जाता है, तथा शहरी जीवन की गुणवत्ता में गिरावट आती है। पैदल चलने वालों को विशेष रूप से परेशानी होती है, क्योंकि पार्क किए गए वाहन अक्सर पैदल चलने के रास्तों पर अतिक्रमण कर लेते हैं, जिससे उन्हें मजबूरन सड़कों पर आना पड़ता है और उनकी सुरक्षा से समझौता होता है। आर्थिक दृष्टि से, पार्किंग की कमी स्थानीय व्यवसायों को प्रभावित करती है, क्योंकि भीड़भाड़ वाली सड़कें ग्राहकों को आकर्षित नहीं करती हैं। पार्किंग स्थल की उच्च मांग से अचल संपत्ति की लागत भी बढ़ जाती है, जिससे हरित स्थलों की कीमत पर पार्किंग अवसंरचना के विकास को बढ़ावा मिलने से शहरी विस्तार और पर्यावरण क्षरण को बढ़ावा मिलता है। भारत में मोटर वाहनों से सम्बंधित मामले केंद्र और राज्य दोनों के अधिकार क्षेत्र में आते हैं। हालांकि भारत के शहरों के लिए वाहनों की बढ़ती भीड़ एक उभरती हुई समस्या है, लेकिन ऑटोमोबाइल उद्योग पर प्रतिबंध लगाने की कोई संभावना नहीं है, क्योंकि इसकी आर्थिक और रोजगार देने की

क्षमता काफी ठीक है और यह भारत के लिए महत्वपूर्ण है। सभी पांच शहरों की पार्किंग नीतियाँ कुछ महत्वपूर्ण पहलुओं पर सहमत होती दिखती हैं। वे इस बात पर एकमत हैं कि पार्किंग मुफ्त नहीं हो सकती और जहाँ भी सार्वजनिक स्थान का उपयोग किया जाता है, वहाँ शुल्क लिया जाना चाहिए क्योंकि 'मुफ्त पार्किंग' की अवधारणा टिकाऊ नहीं है।

पार्किंग समस्या के समाधान के लिए एक व्यापक रणनीति की आवश्यकता है जिसमें पर्याप्त पार्किंग अवसंरचना का विकास, स्मार्ट पार्किंग प्रौद्योगिकियों को अपनाना और पार्किंग विनियमों का प्रवर्तन शामिल हो। उदाहरण के लिए, पार्किंग क्षेत्रों को परिभाषित करना और वाहन पहचान सेंसर और स्वचालित लाइसेंस प्लेट पहचान जैसी तकनीक का उपयोग करके पार्किंग प्रबंधन को सुव्यवस्थित किया जा सकता है। इसके अलावा, भूमि मूल्य और भीड़भाड़ के आधार पर पार्किंग शुल्क को समायोजित करके भीड़भाड़ वाले क्षेत्रों में अनावश्यक वाहन उपयोग को हतोत्साहित किया जा सकता है। बुनियादी ढांचे के समाधान के अलावा, सार्वजनिक परिवहन और टिकाऊ शहरी गतिशीलता प्रथाओं को बढ़ावा देने से पार्किंग दबाव कम हो सकता है। सार्वजनिक परिवहन, साइकिल और पैदल चलने के

वाहनों की पार्किंग के संकट से जूझते शहर

उपयोग को प्रोत्साहित करने से निजी वाहनों पर निर्भरता कम हो सकती है, जिससे पार्किंग स्थलों की मांग कम हो सकती है।

यह ज़रूरी नहीं है कि अच्छा सार्वजनिक परिवहन यातायात की भीड़ को काफ़ी कम कर दे। भीड़भाड़ की स्थिति में सुधार करने के लिए, शहरों को निजी कारों के स्वामित्व और उपयोग के कार्यात्मक, मनोवैज्ञानिक और सांस्कृतिक मूल्यों को लक्षित करने वाली गतिविधियों के साथ ही अपनी सार्वजनिक परिवहन प्रणालियों को बेहतर बनाने के प्रयासों को मिलाकर काम करना होगा।

भारत में वाहन पार्किंग की समस्या एक जटिल मुद्दा है जिसके लिए बहुआयामी दृष्टिकोण की आवश्यकता है, जिसमें शहरी नियोजन, नीति सुधार, तकनीकी नवाचार और सांस्कृतिक परिवर्तन शामिल हैं। इस चुनौती से सीधे निपटकर, भारत अपनी शहरी गतिशीलता को बढ़ा सकता है, अपने नागरिकों के जीवन की गुणवत्ता में सुधार कर सकता है और टिकाऊ शहरी विकास के लिए एक मिसाल क़ायम कर सकता है। आगे का रास्ता सरकार, निजी क्षेत्र और जनता के बीच बेहतर शहरी स्थानों की पुनर्कल्पना और पुनर्निर्माण के लिए सहयोगात्मक प्रयासों में निहित है।

- डॉ. सत्यवान सौरभ जी, कवि, स्वतंत्र पत्रकार एवं स्तंभकार, आकाशवाणी एवं टीवी पेनालिस्ट, बड़वा (सिवानी), भिवानी (हरियाणा)

भारतीय परम्परा

की मासिक ई-पत्रिका के पुराने सभी अंकों को देखने के लिए किताब के आइकन पर स्पर्श करें !!



भारतीय परम्परा की मासिक ई-पत्रिका

नियमित प्राप्त करने हेतु हमें
सम्पर्क करें!



- ❖ व्हाट्सएप और टेलीग्राम पर से हर महीने के शुरु में नया अंक प्रेषित किया जाता है। यदि किसी कारणवश आपको नया अंक नहीं मिला हो तो कृपया हमें सूचित करें।
- ❖ भारतीय परम्परा ई-पत्रिका के लिए दिए गए नंबर **7303021123** को मोबाइल में सेव करें और व्हाट्सएप एवं टेलीग्राम के ग्रुप से जुड़े।
- ❖ ई-पत्रिका में जहाँ कहीं भी सोशल मीडिया के आइकॉन बने हुए हैं उन्हें स्पर्श करने पर आप उस लिंक पर इंटरनेट के माध्यम से पहुँच सकते हैं।
- ❖ ई-पत्रिका में कुछ त्रुटियाँ हो तो हमें जरूर बताये और आपको पत्रिका पसंद आये तो अपने परिवारजनों और मित्रों के साथ शेयर करें।
- ❖ **भारतीय परंपराओं** को संजोये रखने एवं ई-पत्रिका को सुरुचिपूर्ण बनाने के लिए आपके सुझावों और विचारों से अवगत जरूर कराये।



सहनशीलता का गिरता स्तर- समाज के लिए हानिकर

आज भौतिकतावाद, एकाकी परिवार और पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव में सहनशीलता शनैः शनैः क्षीण होती जा रही है। है। इस समस्या के मूल में मूल्यों की अवमानना/ स्वार्थपरता की बढ़ती प्रवृत्ति/माता-पिता द्वारा उचित देखरेख में कमी/बुजुर्गों के सान्निध्य का अभाव आदि कारणों से इंकार नहीं किया जा सकता। यही कारण है कि ज़रा-ज़रा सी बात पर व्यक्ति अपना आपा खो देता है। तनिक से आवेश में ही बात लड़ाई- झगड़े व मार- पीट तक पहुँच जाती है। छोटी सी बात को भी सहन न करने के कारण दाम्पत्य जीवन में खटास बढ़ रही है। समाज पारिवारिक विखण्डन के दंश को झेलने के लिए विवश है। पारस्परिक संबंध वैमनस्य का सामना कर रहे हैं। रिश्ते-नातेदारी में दूरियाँ बढ़ रही हैं। पास-पड़ोस में अपनत्व क्षीण हो रहा है। उल्लेखनीय है कि सामान्य से प्रकरण में भी

क्रोधित हो जाना और असहनशीलता का परिचय देना वैयक्तिक/सामाजिक स्वास्थ्य को चिह्नित करता है।

सहनशीलता का गिरता ग्राफ प्रबुद्धजनों के लिए चिंतनीय संदर्भ बनता जा रहा है। इसमें कोई संशय नहीं कि वैश्विक स्तर पर भी ऐसी घटनाओं की संख्या बढ़ रही है। 'असहनशीलता' के संभावित नकारात्मक प्रभाव से दूर रहने के लिए सचेतना आवश्यक है। निस्संदेह, आज के दौर में सामाजिक उत्कर्ष के निमित्त विचारों में सहनशीलता को प्रबंधित करना महत्वपूर्ण दिखाई देता है।

'मनुष्यता' की अभिव्यक्ति में सहायक है सहनशीलता। इससे व्यक्ति की सौम्य प्रकृति उद्धाटित होती है। इसमें "जियो और जीने दो" का आदर्श समाहित है। यह न तो किसी से सहमति है और न ही अन्याय के समक्ष तटस्थता। वस्तुतः यह तत्व मानवता के प्रति सम्मान है। निहित स्वार्थ और संकुचित सोच के जापक दूषित विचारों के विरुद्ध शांत प्रतिक्रिया है। यह संयमन का प्रकटीकरण है। सामाजिक ताने-बाने की मजबूती के लिए व्यावहारिक स्तर पर लचीलेपन की प्रस्तुति है। यह सामाजिक विखण्डन को रोकता है। सहन-शक्ति का आश्रय लेकर व्यक्ति/परिवार/समाज में अनुकूलता का समावेश असंभव नहीं।

सहनशीलता परिवेश में सकारात्मकता को प्रसारित करने में सहायक है। आर्ष मार्गदर्शन है कि दुष्ट प्रकृति वाले लोगों के अनर्गल बातों को सहन करना तथा श्रेष्ठ लोगों के सदाचरण में सदा संलग्न रहना ही समीचीन है-

**सद्भिः पुरुस्तादभिपूजितः स्यात् सद्भिस्तथा
पृष्ठतो रक्षितः स्यात्।**

**सदासतामतिवादांस्तितिक्षेत् सतां वृत्तं
चाददीतार्यवृत्तः॥ महाभारत/आदि पर्व/अध्याय
87/श्लोक 10**

सहनशीलता एक सांस्कृतिक विचारणा है जिससे समाज में व्यक्ति की संस्थिति निर्मित होती है। सामाजिक सौहार्द को विस्तारित करने में सहनशीलता की महत्वपूर्ण भूमिका को नज़रअंदाज नहीं किया जा सकता। इसके सुप्रभाव में प्रतिकूल परिस्थितियों के मध्य भी अनुकूलता की संभावना निहित है। यह सद्गुण उग्रता को शांत करता है है। वस्तुतः किसी के विचार/व्यवहार को असहमति के पश्चात् भी सहजता से सहन कर लेना स्वयं में शांति का आधार बनता है। इस तरह सहनशीलता की कथित उपलब्धि सामान्य तो नहीं।

यह वैशिष्ट्य मानव संस्कृति, सभ्यता और संस्कारों का प्रकटीकरण करता है। जटिल स्थितियों को संभालने का सामर्थ्य रखता है। विसंगतियों को सुसंगत बनाता है। सह-अस्तित्व में सहायता करता है। सामाजिकों में आत्मीयता

को बढ़ावा देता है। आत्मनियंत्रण में सहायता करता है। परिवार, रिश्तेदार, मित्र, पास-पड़ोस में सामंजस्य बढ़ाता है। इस तरह परिवेश में शांति-सद्भाव-सौहार्द को प्राथमिकता देता है। संवेदनात्मक दृष्टिकोण रखने के कारण मानवता के संरक्षण में प्रभावकारी है। निस्संदेह, सामाजिक स्वरूप में रचनात्मक परिवर्तन की संभावनाओं को देखते हुए इसे प्रयोजनीय कहना उपयुक्त है।

समाज में व्याप्त विसंगतियों से सामना होना तो जीवन की स्वाभाविक स्थिति है। किंतु सहनशीलता का सहारा लेकर बहुविध जटिलताओं को सुलझाना- चुनौतियों का सामना करना- द्वेष विद्वेष का परिहार करना जीवन का सौंदर्य है। सामाजिक प्राणी होने के नाते मानव जीवन में व्यष्टि व समष्टि स्तर पर अच्छे संबंधों की आवश्यकता होती है और सहनशीलता इसमें कारगर है। यह मनुष्य के लिए आभूषणवत् है जो उसकी सामाजिक संस्थिति को निर्मित करती है। संसार यात्रा को सुगम बनाता है सहनशीलता का आश्रय। धैर्य और संयम को बढ़ावा मिलता है इससे। व्यक्तित्व को विनम्र बनाकर समाज के संस्करण व परिष्करण की दृष्टि से यह महत्वपूर्ण है।

**सहिष्णुता, क्षान्ति, तितिक्षा सहनशीलता के
ही अपर पर्याय हैं।**

सनातन संस्कृति से हस्तगत यह अवधारणा का मानवता के संरक्षण में योगदान देती है। जटिल परिस्थितियों को नियंत्रित करने में सहनशीलता महत्वपूर्ण भूमिका रचती है। हां, यह अवश्य है कि सहनशील व्यक्ति में शांति और संतोष का व्यापन एक स्वाभाविक उपलब्धि है। यह वैचारिक संघर्ष को रोक सकती है। तनाव को दूर कर सकती है। सहनशीलता एक शक्ति है। इसकी सकारात्मक ऊर्जा जीवन में आने वाले उतार-चढ़ाव का सामना करने में सहयोग करती है।

वर्तमान में "सहिष्णुता" शब्द का कुछ अर्थभेद के साथ तात्पर्य है- दूसरों के कार्यों और विचारों के प्रति उदार भावना रखना। सहनशीलता के सुप्रभाव में व्यक्ति दूसरों के विचार-विश्वास-व्यवहार के प्रति सम्मान का भाव रखता है। यह व्यक्ति को उग्र प्रतिक्रिया से विरत करता है। सहनशीलता आपसी व्यवहार में विनम्रता को संरक्षित करती है।

'क्षान्ति' शब्द सहनशीलता के लिए प्रयुक्त होता है। सामर्थ्यवान होते हुए भी अपराधी के प्रति किसी भी प्रकार का दण्ड का भाव न रखना ही क्षान्ति है। श्रीमद्भगवद्गीता में उल्लिखित है कि-

अमानित्वमदम्भित्वमहिंसा क्षान्तिरार्जवम्।

आचार्योपासनं

शौचं

स्थैर्यमात्मविनिग्रहः॥श्रीमद्भगवद्गीता/13/7

क्षान्ति सह-अस्तित्व में भी मददगार है।

"तितिक्षा" मन की एक वृत्ति है। इसका तात्पर्य है- परापराधसहनम् (दूसरों का अपराध सहन करना) इसकी विद्यमानता को विशिष्टता के रूप में स्वीकार किया गया। महर्षि व्यास का स्पष्ट अभिमत है कि-

अक्रोधनो क्रोधनेभ्यो विशिष्टस्तथा

तितिक्षुरतितिक्षोर्विशिष्टः।

अमानुषेभ्यो मानुषाश्च प्रधानाः

विद्वांस्तथैवाविदुषः प्रधानः॥ महाभारत/आदि

पर्व/अध्याय 87/श्लोक 6

अनेक दुर्गुणों में 'अतितिक्षा' (सहनशीलता का अभाव) का भी उल्लेख किया गया। इन पर नियंत्रण पाने के लिए विवेक की- संयम की- नीति की जरूरत होती है। किंतु जब गुणों से युति बन जाती है तो वह व्यक्ति सामान्य मनुष्य की तुलना में 'विशेष' (उत्कृष्ट) माना जाता है। जीवन की श्रेष्ठता में गुणों की अनिवार्यता से इंकार नहीं किया जा सकता। निश्चय ही विवेकी जन इस सद्गुण की महत्ता को अंगीकार कर जीवन को सरल बनाते हैं।

सहनशक्ति में आक्रोश/आवेश को नियंत्रित करने की योग्यता है। प्रायः देखा जाता है कि जब दूसरा पक्ष किसी कटुता को सहन कर लेता है तो अपराध करने वाला पक्ष असफल होने का दंश झेलता है। सद्गुण असहनशीलता के अवांछित प्रभाव से सचेत करते हैं कि-

**आक्रुष्यमानो नाक्रोशेनमन्युरेव तितिक्षतः।
आक्रोष्टारं निर्दहति सुकृतं चास्य विन्दति॥
महाभारत/आदि पर्व/अध्याय 87/श्लोक 7**

यहां सहनशीलता को अपना विहित है। 'मनुष्यता' के नाते किसी की निंदा- अपशब्दों की प्रतिक्रिया निंदा- अपशब्दों से करना समीचीन नहीं। ऐसे वाग्वाण हृदय को आघात पहुंचाते हैं। दुष्ट जनों के मुख से निःसृत सदोष वचन शोक के कारक बन जाते हैं। अतः विवेकी पुरुष द्वारा दूसरे के प्रति ऐसी वाणी व व्यवहार से विरत रहना तथा श्रेष्ठ पुरुषों के सदाचार का आश्रय लेकर सद्व्यवहार करना श्रेयस्कारी है।

कथित स्थिति में सहनशीलता अपनाने से आचार व व्यवहार में आने वाली बाधाओं में कमी देखी जाती है। पूर्वोक्त श्लोक में कहा गया कि यदि शब्दों के द्वारा आक्रोशित किया जा रहा हो तो उसको सहन कर लेना चाहिए, ऐसा करना आक्रोश पैदा करने वाले को ही जला डालता है। ध्यातव्य है कि महात्मा बुद्ध तथा महर्षि दयानन्द के जीवन की अनेक घटनाओं ने उक्त संदर्भ को सुपुष्ट किया है। सहनशीलता के मार्ग में सबसे बड़ी बाधा है- क्रोधा क्रोध के वशीभूत व्यक्ति अभावात्मक सोच से मुक्त नहीं हो पाता, इस कारण मन-मस्तिष्क का दुःख-तनाव-विरोध-उग्रता आदि से आच्छादित होना अचम्भे की बात नहीं। कथित आवेग को विलम्बित कर इस पर नियंत्रण में कुछ सीमा तक सफलता पाई जा

सकती है। असहनशीलता एक नकारात्मक वृत्ति है, इसके बिना कई बार व्यक्ति बेचैनी को जीता है। कभी-कभी इस वजह से मन व शरीर के लिए कष्टकारी स्थिति निर्मित हो जाती है। सामाजिक पर्यावरण में सुधार की दृष्टि से विचारों में सहनशीलता को प्रश्रय देना सामयिक आवश्यकता है।

सत्संगति- सद्बिचार- सद्भावना आदि के माध्यम से सहनशीलता की दिशा प्रशस्त होती है। सामाजिक परिवेश के स्वास्थ्य की दृष्टि से इसे सशक्त साधन कहना अत्युक्ति नहीं। संदर्भित जागरूकता से सामाजिक स्वरूप को बेहतर बनाने के प्रयासों की अपेक्षा है। नवागत पीढ़ी को सहनशीलता की महत्ता से अवगत कराना उचित है। व्यक्ति/समाज में रचनात्मक बदलाव के लिए सहनशीलता की व्यावहारिक रूप आवश्यक है। ध्यातव्य है कि सहनशीलता की कमी समाज की एकता में अवरोध डाल सकती है। अन्ततः समाज/राष्ट्र के समुज्ज्वल भविष्य के महत्वाकांक्षी उद्देश्यों की पूर्णता के निमित्त भी इस ओर ध्यान देना युक्तियुक्त है।

**- प्रो. कनक रानी जी, पूर्वअध्यक्ष- संस्कृत
विभाग, आर्य महिला स्नातकोत्तर
महाविद्यालय, शाहजहांपुर (उत्तर प्रदेश)**

वासंती गीत - तुम्हारे यहां भी!

तुम्हारे यहां भी - आया होगा मधुमास ।
पेड़ों पर भी ख़ूब - हरियाली छाई होगी ।
बागों में फूलों की - बारातें आई होंगी ।

तुम्हारे यहां भी - दहकते होंगे पलाश ।
पीली चुनर ओढ़ - सरसों नाच रही होगी ।
नीला लहंगा - चुन्नी - अलसी पहनी होगी ।

तुम्हारे यहां भी - फूले होंगे अमलतास ।
घर का द्वार अब - बयार खटखटाती होगी ।
धूल भी आंखों में - धूल झोंक जाती होगी ।

तुम्हारे यहां भी - होगा फाग का उल्लास ।
कोयल बसंत की - चिट्ठी डाल जाती होगी ।
फागुन का मधु - रस - वह घोल जाती होगी ।

तुम्हारे यहां भी - भौरों के दिन होंगे ख़ास ।
तितलियां भी रस के -दोने ख़ूब पीती होंगी ।
ख़ुशबुओं से कलियां - हवा महकाती होंगी ।

तुम्हारे यहां भी - बाग होंगे बदहवास ।

- अशोक आनन जी, मक्खी, जिला शाजापुर (म.प्र.)

जी सोरो करा देवे



गूंदपाक सियाळे मोंही, दही-छाछ उँन्हाळे मोंही,
चीलडो बरसात मोंही, बादाम-काजू बारात मोंही..
जी सोरो करा देवे



गलरको खीर रौ, कोफ्तो पनीर रौ,
रंग केसर वाली फीणी रौ, चूरमो देसी घी रे साथे देसी चीणी रौ-
जी सोरो करा देवे

रोटी बाजरी री, चटणी काचरी री ,
बाटो भोभर रौ, बड़ो मोठ-मोगर रौ-- जी सोरो करा देवे



सबड़को राबड़ी रौ, स्वाद गुलाबड़ी रौ ,
साग केरसांगरी रौ, मिठास 'गुड़ री डळी रौ' .. जी सोरो करा देवे



खुपरी मतीरा री, खुशबु सीरै री ,
अचार भोकरु री, भुजियो बीकानेर रौ .. जी सोरो करा देवे

कचोरी दाळ री, जळेबी घाळ री,
खीचडो बाजरी मोठ रौ, मजो सावण री गोठ रौ .. जी सोरो करा देवे

दूध घर री गाय रौ, सुरडको गर्म चाय रौ ,
राजभोग छेणा रौ, शर्बत केरी पोदीना रौ .. जी सोरो करा देवे

गप्पा गुवाड़ री, शान मारवाड़ री ,
मीठो पत्तो पान वालो, खाणो राजस्थान रौ .. जी सोरो करा देवे

- गोवर्धन दास बिन्नाणी जी, 'राजा बाबू', बीकानेर (राजस्थान)





काल के समय के थे। ताड़ पत्तों में उन्होंने अनेक गाने लिखे पर आज उनकी एकमात्र रचना उपलब्ध है जिससे वे अत्यंत प्रसिद्ध हो गए। वह है “बगुला संदेश”।

उनकी एकमात्र संपत्ति थी उनकी फटी हुई धोती और उससे भी बदहाल का एक तौलिया। वे अपनी दरिद्रता से पीड़ित होकर अपने यहां से निकलकर पांड्य राज्य जा पहुंचे। उनका विचार था कि वहां के राजा या जमींदार का गुणगान कर कुछ सम्मान की निधि पाएंगे और फिर अपने यहां लौटेंगे। इसी इरादे से वे निकले पर तब सर्दी का मौसम था। घनघोर वर्षा के बाद ठंडी हवा बहने लगी। अतः वे एक दीवार की आड़ में जा बैठे। सर उठाकर देखा कि कहीं दुबारा बारिश न हो। पर उन्हें एक बगुले की जोड़ी उड़ती दिखाई दी। उन्हें देखते ही उन्हें अपनी पत्नी की याद आई। घर से निकल आए दो दिन हो गए। वह काफी चिंतित रहेगी। उसे कोई संदेश भेजना आवश्यक है। पर कैसे भेजें? तब उनके मन में यह विचार आया कि इन बगुलों के माध्यम से ही संदेश भेज दूं। अपनी भूख और प्यास में भी उनकी काव्य सृजन शक्ति पूरी तन्मयता में थी और वे उन बगुलों को संबोधित करते हुए संदेश देते हैं, जिसका सारांश इस प्रकार है:

“लाल रंग के पैरों वाले और फोड़े हुए ताड़ के फल के समान दिखते व मूंगे के रंग की

तमिलनाडु के कुंबकोणम नामक शहर की तीन किलोमीटर की दूरी पर एक गांव का नाम है- **शक्ति मुत्तम यानि शक्ति का चुंबन। यहां भगवान शिव का एक पुरातन मंदिर है। यहां के ईश्वर का नाम है शिवककोळंदु नादर और देवी का नाम है पेरियनायकी।** इस मंदिर की देवी पार्वती की मूर्ति परमेश्वर को आलिंगन किए हुए है। अतः इस मंदिर का नाम शक्ति मुत्तम पड़ा। इस मंदिर में पाए गए शिला लेख में शिव का नाम तिरु शक्ति मुत्तम उडैयार है यानि शक्ति का चुंबन पाने वाले। यह कुलोत्तुंग चोल काल का मंदिर है। अनेक शिला लेखों में यह उल्लेख है कि इस मंदिर में दीप जलाने के लिए तेल के प्रावधान हेतु आय के लिए सोने के सिक्के, भेड़ और खेत दान दिए गए हैं।

यहां के एक गरीब पंडित थे जिनका असली नाम आज तक अज्ञात है। पर अब वह पूरा गांव ही उनके नाम से जाना जाता है। ये पंडित संघ

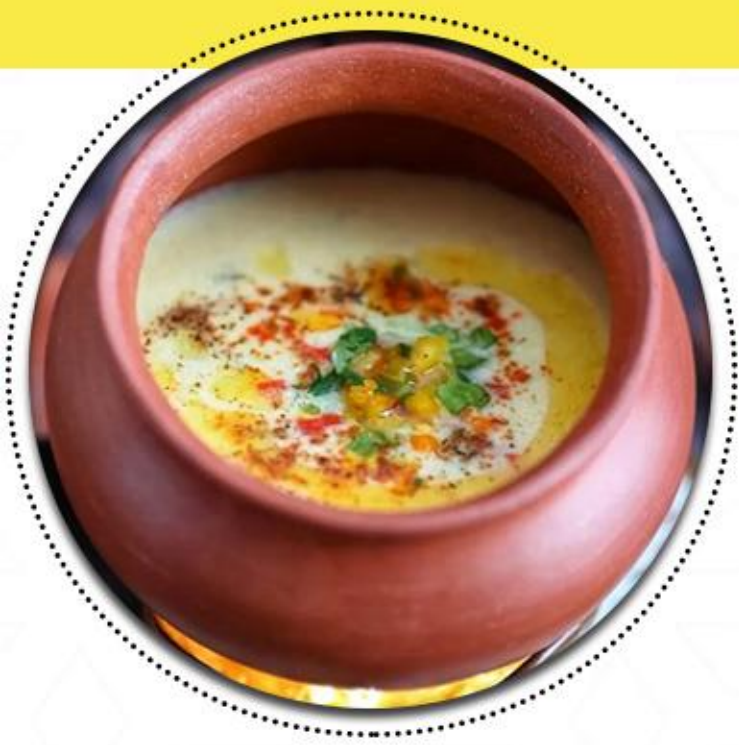
लंबी चोंच वाले हे बगुले! तुम और तुम्हारी सखी का यदि पास के कन्याकुमरी के मंदिर के तालाब में नहाकर उत्तर की ओर उड़ने का इरादा हो, तो वहां सत्ति मुत्तम नामक गांव में एक बड़ा तालाब है जहां तुम्हें खाने के लिए काफी मछलियां मिलेंगी। उस तालाब के तट पर कभी भी टूट गिरने की स्थिति में मिट्टी की दीवारों वाला घर ही मेरा है। उसमें मेरी प्रिय पत्नी रहती है। जब भी दीवार पर छिपकली 'टिक-टिक' की आवाज करती है, उसे शुभ शकुन मानकर मेरे आगमन का इंतज़ार करती होगी। तुम उससे जा बताना, मांजी! आपके पति को हमने पांड्य राज्य के मदुरै के एक स्थान पर देखा जो भूख से लाचार और ठंड से ठिठुरते हुए और जोर की ठंडी हवा से बचने के लिए जगह के अभाव में सिकुड़कर अपने हाथों से अपने शरीर को कसे हुए और अपने पैरों से शरीर के बाकी भागों को ढककर उस ठंड में कांपते हुए सांप-सा सिकुड़कर सुखी बन बैठे हुए थे। आप चिंता न करें। तुम दोनों यही बात उसे बताना।”

उस समय वहां अपने प्रदेश की जांच हेतु निकले मारन वळुदि पांड्य राजा उस पंडित जी की कविता को सुनकर आश्चर्य चकित हुआ। उसके मन का संदेह उस दिन दूर हुआ। वह बगुले की सुंदरता को चित्रित करने की उपमा की खोज में था। उसने काफी पंडितों से अपने संदेह का निवारण मांगा पर असफल था। पर इस लाचार एवं गरीब पंडित ने **'दो भागों में फोड़े गए ताड़ फल के समान'** का उपमा बताकर उनका संदेह निवारण कर दिया। इससे प्रसन्न होकर राजा ने अपना बहुमूल्य शाल उनपर ओढ़ दिया। यही नहीं अपने सेवकों से उन्हें अपने राजमहल में आमंत्रित कर खूब धन देकर सम्मानित किया।

- डॉ. जमुना कृष्णराज जी, चेन्नई

पत्रिका की प्रूफ रीडिंग करने के लिए

सौनल जी ओमर का **दैन्यवाद**



राजस्थान का पारंपरिक व्यंजन मक्की की राब, सर्दियों के लिए यह सेहत और स्वाद का अनूठा मेल है।

सामग्री - 1 कप दही (खट्टा हो तो बेहतर, या छाछ का उपयोग करें), 1/4 कप मक्के का आटा (पीला स्वीट कॉर्न फ्लोर), 3.5 कप पानी (यदि छाछ का उपयोग कर रहे हैं तो 2 कप), 1/2 छोटा चम्मच जीरा, दरदरा पिसा हुआ, 1 छोटा चम्मच चीनी, 1/2 छोटा चम्मच काली मिर्च, ताजी पिसी हुई, स्वादानुसार नमक।

सजावट के लिए -

उबले हुए मकई के दाने, बारीक कटी हुई रंग-बिरंगी शिमला मिर्च, बारीक कटा हुआ हरा धनिया, हरी मिर्च, भुना हुआ जीरा पाउडर, काली मिर्च, घी।

विधि -

1. एक बर्तन में मक्के का आटा और दही डालें। धीरे-धीरे पानी डालते हुए लगातार फेंटें, ताकि गुठलियां न बनें और मिश्रण एकदम चिकना हो जाए।
2. इसमें नमक, चीनी, काली मिर्च और दरदरा पिसा हुआ जीरा डालें।
3. इस मिश्रण को एक बड़े साँसपैन में डालें और उबाल लें। ध्यान रखें कि इसे लगातार चलाते रहें, नहीं तो यह फटने लगेगा।
4. गैस की आंच धीमी-मध्यम करें और इसे 15-20 मिनट तक या गाढ़ा होने तक पकने दें।
5. स्वाद के अनुसार मसाले समायोजित करें और गैस बंद कर दें। मक्की की राब परोसने के लिए तैयार है।
6. इसे मकई, रंग-बिरंगी शिमला मिर्च, हरा धनिया, हरी मिर्च, काली मिर्च, भुना हुआ जीरा पाउडर और भरपूर घी के साथ सजाएं।
7. गरमागरम परोसें और आनंद लें!



विविधा कुकिंग क्लासेस, पूनम राठी जी, नागपुर



मेरी ख्वाहिश-ए-दिल है कि मेरी बेटी शादी के बाद भी अपना सपना पूरा करें और हमारा नाम यूँ ही रोशन करती रहे।

मि.और मिसेज तिवारी जी एक - दूसरे को देख खुसुर-फुसुर करने लगे। नेहा के हृदय में चिंता की काली घटाएँ उमड़ रही थीं; चेहरे में फीकापन दिखाई दे रहा था क्योंकि रिश्ता बहुत अच्छा था; लेकिन उससे भी ज्यादा जरूरी है सपनों को उड़ान देना!

शर्मा जी! हमें और हमारे बेटे राहुल को आपकी बेटी नेहा पहली नजर में ही पसंद आ गई। इस बारे में आप लोगों का क्या विचार है? हम जल्द ही जानना चाहते हैं।

जी...जी... तिवारी जी; ये तो बहुत ही शुभ समाचार है। शादी पक्की हो इससे पहले मैं आप लोगों के समक्ष अपनी कुछ बातें रखना चाहता हूँ। अरे.....! क्या बात है शर्मा जी; आप निश्चित रहिए। हम दहेज-वहेज के पक्ष में बिल्कुल नहीं हैं आप अपना दिल ठंडा रखिए; इस मामले में तिवारी जी हँसते हुए बोले।

दरअसल, बात यह है कि हमारी बेटी नेहा को कथक नृत्य बहुत पसंद है। नेहा हर प्रतियोगिता में अपनी सहभागिता प्रदान करती है। **नेशनल-इंटरनेशनल तक के कंपीटिशन में फर्स्ट आई है।** दूर-दूर देश-विदेशों में इसके नृत्य की प्रशंसा होती रहती है।

थोड़ी देर बाद मिसेज तिवारी सोफा से उठ हाथ आगे कर बोली- देखिए भाई साहब; आजकल की लड़कियाँ घर में कैद नहीं रहना चाहती हैं, इन लड़कियों से हम भलीभांति परिचित हैं। लेकिन हमारी नेहा तो..... बीच में ही टोकती हुई मिसेज शर्मा बोली। मिसेज शर्मा.....! मेरी बातें अभी पूर्ण नहीं हुईं। आप लोगों को क्या लगा? हम आपकी बातें सुन रिश्ते से इनकार कर देंगे; सभी की नज़रें मिसेज तिवारी पर टिकी हुई थीं। इतना सुनने के बाद नेहा की धड़कनें और बढ़ने लगीं।

नहीं-नहीं..... भाई साहब! हमारी सोच इतनी छोटी नहीं है कि **हम नेहा के सपनों को कैद कर रसोई तक ही सीमित रखें। हमारी बेटी नहीं है तो क्या हम आपके हृदय की बातें नहीं समझ पाएँगे?** मैं भी तो किसी की बेटी

हूँ न? आप अपनी सारी चिंताओं को इस्टबिन में फेंक आइए; और हाँ अब से नेहा हमारी हुई।
ऐसा बोलकर मिसेज तिवारी ने नेहा को गले से लगा लिया।

वाह! क्या बात है आज मैं धन्य हुआ; आप लोगों से रिश्ता जोड़ कर। तिवारी जी आप लोगों ने हम सब का मान रखा। शर्मा जी के साथ-साथ उनके घर के सभी लोगों के होठों पर हँसी और आँखों में खुशियों के मोती चमकने लगे।

- प्रिया देवांगन जी, "प्रियू", राजिम, जिला - गरियाबंद (छत्तीसगढ़)

WHITE BERRY
RESIDENCY
KANDIVALI (EAST)

It's Time To
Stay In

- Terrace Garden with Lift Accessibility
- Adjoining Jain Derasar
- Gym - Fitness at your Doorstep
- Table Tennis - Bring out your inner player
- Library - Increase kids knowledge

1, 2 BHK & Jodi Flats
with modern amenities

98705 80810 ASHA NAGAR, THAKUR COMPLEX, KANDIVALI (EAST), MUMBAI.

पहुंचने
से अधिक जरूरी है
ठीक से
यात्रा करना...!

मेहनत करने वाले
का रास्ता भले ही
लंबा हो लेकिन
उसकी मंजिल
तय होती है...!

ईमानदारी
बड़ा महंगा शौक है,
हर कोई नहीं पाल
सकता...!

गलत को गलत,
बोलने वाले इंसान,
गलत लोगों की
नज़रों में
गलत ही होते हैं...!

ज़िंदगी में समस्या देने
वाले की हस्ती कितनी
भी बड़ी क्यों न हो पर
भगवान की कृपा दृष्टि से
बड़ी नहीं हो सकती...!

किसी का दर्द
समझने के लिये,
इंसान के अंदर
इंसान का होना
जरूरी है...!



क्या हमारे कार्य करने की कोई सीमा होती है?

इसका सही-सही उत्तर देना शायद संभव न हो लेकिन हम जितना सोचते हैं उससे कहीं अधिक मुश्किल और असंभव लगने वाला कार्य भी कर सकते हैं।

एक बार एक किसान अपने फ़ार्म हाउस पर काम कर रहा था। तभी उसका बेटा एक गाड़ी में कुछ सामान लेकर आया। जैसे ही वो फ़ार्म हाउस पहुँचा एक गड्ढे के पास उसकी गाड़ी पलट गई और वो कीचड़ में गाड़ी के नीचे दब गया। जैसे ही किसान ने ये दृश्य देखा वो फ़ौरन वहाँ पहुँचा और पूरा ज़ोर लगाकर गाड़ी को उलट दिया और अपने बेटे को सकुशल बाहर निकाल लाया। यह एक असंभव कार्य था। यह देखकर वहाँ काम करने वाले लोगों को बड़ा आश्चर्य हुआ। उन्होंने किसान से पूछा कि तुमने यह असंभव कार्य कैसे कर डाला? किसान ने कहा कि मुझे नहीं पता था कि ये असंभव कार्य है। मैं तो बस अपने

बेटे को बचाना चाहता था इसलिए मैंने बिना कुछ सोचे-समझे गाड़ी को उलटने में अपनी पूरी शक्ति लगा दी।

क्या यह संभव है? **वास्तव में हम जो सोचते हैं उससे कहीं अधिक बड़ा कार्य करना संभव है क्योंकि हममें हमारी सोच से कहीं अधिक कार्य करने की क्षमता होती है।** फिर हम हर कार्य क्यों नहीं कर पाते? इसका कारण है संभव-असंभव का द्वंद्व। हम कार्य करने से पूर्व इस बात पर अवश्य विचार करते हैं कि ये कार्य हम कर पाएँगे अथवा नहीं। अन्य व्यक्ति भी कम सुझाव नहीं देते। हर व्यक्ति अपने अनुभवों के आधार पर बोलता है। साथ ही लोग उस कार्य के दौरान आने वाली संभावित कठिनाइयों के विषय में बताने लगते हैं। इससे कार्य प्रारंभ करने वाले का मनोबल क्षीण हो जाता है और वो उस कार्य को करने का प्रयास ही नहीं करता और प्रयास करता भी है तो उस कार्य की सफलता के प्रति आश्वस्त न होने के कारण अपनी पूरी क्षमता का उपयोग ही नहीं कर पाता। जब व्यक्ति किसी कार्य को करने के लिए बिना किसी आकलन के अपनी पूरी शक्ति लगा देता है तो अविश्वसनीय रूप से असंभव-सा लगने वाला कार्य भी संपन्न हो जाता है। कई बार जब हम कोई कार्य नहीं कर पाते हैं तो किसी दूसरे व्यक्ति के थोड़े-से सहयोग से उसे भली-भाँति पूर्ण कर लेते हैं।

प्रायः देखने में आता है कि कई मज़दूर जब कोई भारी वस्तु उठाने अथवा सरकाने का प्रयास करते हैं तो वो वस्तु टस से मस नहीं होती लेकिन तभी उनका लीडर आता है और कुछ वाक्यों अथवा नारों से उन्हें जोश दिलाता है। तभी चमत्कार-सा घटित होता है और जो वस्तु टस से मस नहीं हो रही थी मज़दूर आसानी से उसे उठा लेते हैं या सरकाने लगते हैं। इससे पता चलता है कि हम अपनी क्षमता के विषय में जितना सोचते हैं, हमारी क्षमता उससे अधिक ही होती है और निरंतर अभ्यास द्वारा इसे और अधिक बढ़ाया जा सकता है। **मुझे हर हाल में ये कार्य करना ही है, जब इस प्रकार का विचार मन में होता है अथवा जब कोई हमसे कहता है कि अमुक कार्य करना ही है तो हम फ़ौरन कार्य करने में जुट जाते हैं और प्रायः सफल ही होते हैं।** वास्तव में हमारे मन में एक सूची होती है जिसके अनुसार हम कुछ काम कर सकते हैं और कुछ काम बिलकुल नहीं कर सकते। ये सूची कुछ स्वयं के अनुभव पर आधारित है लेकिन इस सूची का

अधिकांश भाग काल्पनिक ही होता है। कई बार अत्यंत सरल-से कार्यों के बारे में भी हम सोचते हैं कि ये कार्य हम नहीं कर सकते। इस सूची को परिवर्तित करने की आवश्यकता है। इस सूची के बहुत सारे कार्य ऐसे होते हैं जिन्हें हम थोड़ा-सा अधिक प्रयास करके आसानी से कर सकते हैं। लेकिन ये अतिरिक्त प्रयास कैसे करें? इसका सबसे सरल तरीका यही है कि हम इस विश्वास के साथ कार्य करें कि हम इसे कर सकते हैं और स्वयं को एकाग्र करके पूरी शक्ति कार्य को संपन्न करने में लगा दें। विषम परिस्थितियों में तो ये और भी अनिवार्य है क्योंकि उस समय हमारे पास अन्य विकल्प होते ही नहीं। जब विकल्पहीनता की स्थिति में असंभव-से लगने वाले कार्य करना संभव है तो सामान्य स्थिति में क्यों नहीं?

- सीताराम गुप्ता जी, दिल्ली





मत हूँडो मुझे इस
दुनिया की तन्हाई में...
मैं खुद हूँड रहा हूँ हवा
किधर से आ रही है
मेरी रजाई में...



कदर कर लो ठंड की
अभी फ्री में मिल रही है...
4 महीने बाद पैसे खर्च
करवे के कूलर, A.C.
में ठंड लोगे फिर...



'दूर जमाई फूल समान,
गांव जमाई आधा,
घर जमाई गधे बराबर,
जब चाहा तब लादा...!'



सास मां : शादी से पहले
मायके से खाना बनाना
सीखकर नहीं आई ?
लड़की : ओह प्लीज...वो मेरा
मायका था, कोई होटल
मैनेजमेंट का स्कूल नहीं!



इंग्लिश मुझे शुरू से ही समझ
नहीं आयी... जब T से काम
चल सकता था तो ea
घुमेड़ने की क्या जरूरत थी
Tea की स्पेलिंग में.



टीचर - एक साल में कितनी
रातें होती है?
छात्र दस !
टीचर - वो कैसे ?
छात्र - एक शिवरात्रि और नौ
दिन नवरात्रि!





17. भगवान श्रीराम का जन्म कब हुआ...?

- चैत्रमाह के शुक्लपक्ष की नवमी को अभिजित मुहूर्त में, दोपहर के समय भगवान श्रीराम का जन्म हुआ।

18. दशरथ के कितने पुत्र थे...?

- भगवान श्रीराम दशरथ के ज्येष्ठ पुत्र थे। भरत और दो जुड़वा पुत्र- लक्ष्मण व शत्रुघ्न थे। राम की माता का नाम कौशल्या था। भरत कैकेयी व लक्ष्मण-शत्रुघ्न सुमित्रा के पुत्र थे।

19. भगवान श्रीराम ने अपना विश्वरूप किसको दिखलाया...?

- बाल्यावस्था में बाललीला करते हुए भगवान श्रीराम ने माता कौशल्या को अपना दिव्य विश्वरूप दिखलाया। जिसमें उनके एक-एक रोम में करोड़ों ब्रह्माण्ड समाये हुए थे। अनगिनत सूर्य, चन्द्रमा, शिव, ब्रह्मा, पृथ्वी, काल, कर्म, गुण, और ज्ञान दिखाई दे रहे थे।

20. मुनि विश्वामित्र ने दशरथ से क्या मांगा..?

- यज्ञ में विघ्न करने वालों राक्षसों का नाश करने के लिये मुनि ने भगवान श्रीराम सहित छोटे भाई लक्ष्मण को मांगा।

21. विश्वामित्र मुनि से भगवान श्रीराम व लक्ष्मण ने कौनसी विद्याएं प्राप्त की...?

- बला और अतिबला नामक विद्याएं। मुनि कहते हैं कि ये विद्याएं सौभाग्य, चातुर्य, ज्ञान और बुद्धि की जननी हैं।

22. विश्वामित्र मुनि द्वारा भगवान श्रीराम को कौन-कौन से दिव्यास्त्र प्रदान किये...?

- दण्डचक्र, धर्मचक्र, कालचक्र, विष्णुचक्र, वज्रास्त्र, शिव का त्रिशूल, ब्रह्मास्त्र, वरुणपाश, नारायणास्त्र, आग्नेयास्त्र, वायव्यास्त्र, सम्मोहन अस्त्र, पिशाचों का मोहनास्त्र, कामदेव का मदन अस्त्र सहित समस्त प्रकार के अन्य अस्त्र व शस्त्र प्रदान किये।

23. विश्वामित्र आश्रम की ओर जाते हुए, भगवान श्रीराम द्वारा किसका वध किया..?

- भगवान श्रीराम ने अपने बाण से ताड़का राक्षसी का वध किया।

24. यज्ञ रक्षा के दौरान किन राक्षसों को मार भगाया...?

- भगवान श्रीराम ने अपने बाण की मार से

मारीच राक्षस को सौ योजन विस्तार वाले समुद्र के पार गिराया तो लक्ष्मण ने राक्षस सेना के साथ सुबाहु को अग्निबाण से भस्म कर दिया।

25. मिथिला जाते समय भगवान श्रीराम ने किसका उद्धार किया...?

- विश्वामित्र मुनि के आश्रम के नजदीक ही एक सूने आश्रम में गौतम मुनि की पत्नी अहिल्या, शापवश पत्थर की देह धारण किये खड़ी थी। भगवान श्रीराम की चरणरज से उसका उद्धार हुआ।

26. भगवान श्रीराम व लक्ष्मण को मिथिला नगरी कौन लेकर गया और क्यों ...?

- अपने आश्रम में निर्विघ्न यज्ञ सम्पन्न हो जाने के पश्चात मुनि विश्वामित्र भगवान श्रीराम व लक्ष्मण को जनकपुर (जिसे मिथिला नगरी भी कहा जाता है), लेकर आये। क्योंकि मिथिला के राजा जनक ने अपनी पुत्री, सीता के लिये स्वयंवर का आयोजन किया था।

27. जनकनंदनी सीता जी का जन्म कैसे हुआ...?

- सीता अयोनिजा कन्या थी। एक बार महाराज जनक भूमिशोधन हेतु खेत में हल चला रहे थे कि हल के अग्रभाग से जोती गयी भूमि से एक कन्या प्रकट हुई। हल द्वारा खींची गयी रेखा, जिसे सीता कहा जाता है, से उत्पन्न होने के कारण कन्या का नाम सीता रखा गया।

28. महाराज जनक ने धनुषयज्ञ का आयोजन क्यों किया..?

- धनुषयज्ञ, वस्तुतः जनक द्वारा अपनी पुत्री सीता के विवाह हेतु आयोजित स्वयंवर समारोह था।

29. सीता स्वयंवर की क्या शर्त थी...?

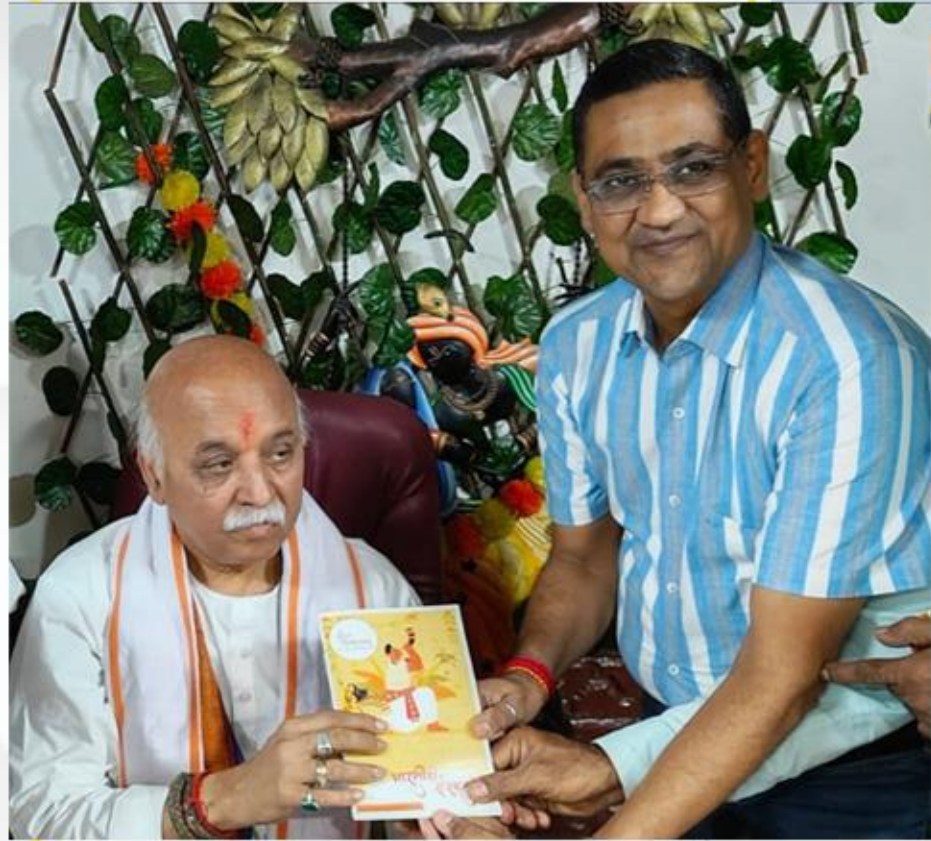
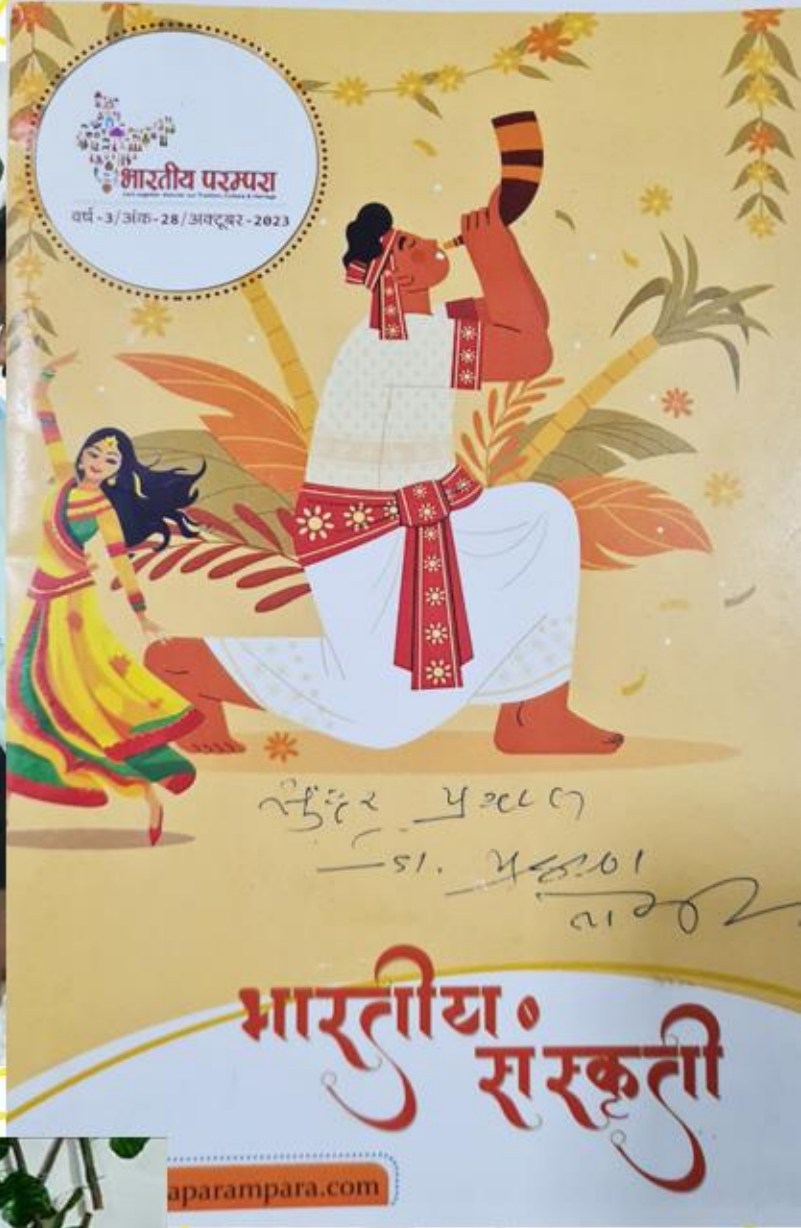
- रामचरित मानस के अनुसार सीता से विवाह के लिये महाराज जनक ने घोषणा की थी कि उसके पूर्वजों को देवताओं से प्राप्त, भगवान शंकर के धनुष को जो भंग करेगा जानकी उसको वरण करेगी। जबकि वाल्मीकि रामायण में राजा जनक मुनि विश्वामित्र से कहते हैं कि- “मुनिश्रेष्ठ...! यदि श्रीराम इस धनुष की प्रत्यंचा चढ़ा दे तो मैं अपनी अयोनिजा कन्या, सीता को इन दशरथकुमार के हाथ दे दूंगा”। भगवान श्रीराम ने खेल-खेल में धनुष उठाकर उस पर प्रत्यंचा चढ़ायी और ज्यों ही उन्होंने धनुष को कान तक खींचा त्यों ही वह बीच से टूट गया।

30. सीताजी के वरण हेतु धनुष भंग करने पर कौन से मुनि नाराज हुए ...?

- परशुराम जी।

(क्रमशः....अगले माह)

- माणक चंद्र सुथार जी, बीकानेर (राज.)



श्रीमान प्रवीण तोगड़िया जी (भारत के डॉक्टर, कैंसर सर्जन और हिन्दू राष्ट्रवाद के प्रबल उद्घोषक) को भारतीय परंपरा की पत्रिका की प्रति प्रदान करते हुए। यह जानकर बेहद खुशी हुई कि पत्रिका आपको पसंद आई और आपने हमारी टीम के प्रयासों की सराहना की। इसके लिए आपका हृदय से बहुत-बहुत आभार।



सामान्यतया हम स्वयं को अपने जैसे लोगों, अपने जैसी रुचियों, आदतों और शौक वाले व्यक्तियों से घेरे रहते हैं, क्योंकि इससे हमें सुरक्षा का अहसास होता है। जबकि, जीवन को समृद्ध बनाने वाले अनुभव कभी भी अपने सुखद क्षेत्र (कम्फर्ट जोन) में नहीं मिलते, उसके लिए हमें खुद को आगे करना होता है और अपने कम्फर्ट जोन से बाहर निकलना होता है।

हालांकि, अपने कम्फर्ट जोन से बाहर निकलना सरल नहीं होता, इसके लिए आशावाद और जोखिम उठाने का साहस होना अनिवार्य है। लेकिन, कम्फर्ट जोन से बाहर निकलने का सबसे बड़ा डर असुरक्षा और विफलता का होता है, जो कि ज़्यादा सोचने से पैदा होता है।

नए दोस्त बनाने, नए लोगों के साथ काम

करने और नए अनुभवों को जानने की राह में सबसे बड़ी रुकावट ज़रूरत से ज़्यादा सोचने की आदत ही है। अंतर्बोध (इन्स्यूशन) एक ताकतवर भावना होती है, जो हमें बहुत पहले ही बता देती है कि हमारे लिए क्या करना अच्छा रहेगा। यह भावना अवचेतन मन के स्तर पर काम करती है और हमारी दुविधाओं के निवारण में अहम भूमिका अदा करती है।

हमें अपने अंतर्मन की आवाज़ को सुनने की आदत विकसित करना ज़रूरी है और हमें इसे नियमित रूप से सुनना चाहिए। अपने सपनों को पूरा करने का सबसे अच्छा तरीका यह है, उन्हें आज से ही जीने लग जाना। कई बार हम इसलिए अपने सपनों को पूरा करने की हिम्मत नहीं जुटा पाते क्योंकि, हमें लगता है कि वो हमारी पहुंच से बहुत दूर हैं।

विशेषज्ञों का कहना है कि, एक बार में एक ही कदम चला जा सकता है और बड़ी से बड़ी यात्रा की शुरुआत उसी पहले कदम से होती है, शुरुआत चाहे छोटी हो लेकिन उसके परिणाम सदैव बड़े होते हैं। हमें एक आत्मविश्वासी व्यक्ति की तरह व्यवहार करना चाहिए और दुनिया को यह संदेश देना चाहिए कि हम इतनी आसानी से हार मानने वाले नहीं हैं।


इतना भर मान लेने से हम शांतचित्त हो सकते हैं कि, हम किसी बड़े प्रयोजन को पूरा करने की

क्षमता रखते हैं और वही हमारे जीवन का लक्ष्य है।

हे परमेश्वर..! कठोर निर्णय लिए बिना हम कामयाब नहीं हो सकते और इसके लिए स्थिर दिमाग की आवश्यकता है। निर्णय लेने में हम समय लें लेकिन, अपनी निर्णयशीलता को धार देने के लिए नए परिप्रेक्ष्यों की खोज करते रहें। अपने कम्फर्ट जोन से बाहर निकलकर हम कुछ ठोस कदम उठाएं, तो फिर सफलता अवश्य हमें हासिल होगी।

धन्यवाद!

- मधु अजमेरा जी, ग्वालियर (म. प्र.)




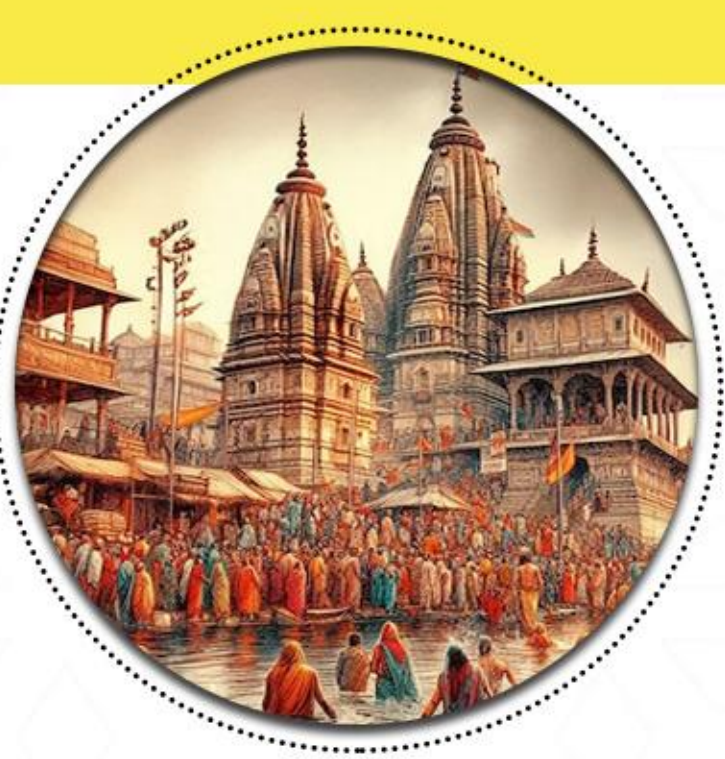
श की पहली साहित्यिक ई-पत्रिका जो ठनीय-श्रवणीय-दर्शनीय है। पत्रिका में दिए गए ऑडियो-वीडियो का निर्मल आनंद उठाया जा सकता है।

मूल्य : 😊 मात्र आपकी मुस्कान

📞 **8610502230**
(केवल संदेश हेतु)
(कृपया अपना नाम व शहर का नाम भी लिखें)

सामने दिए गए चिह्न को दबाने से आपका संदेश स्वचलित रूप से हमें पहुँच जाएगा और नियमित पत्रिकाएँ भेजने के लिए आपका मोबाइल नं.पंजीकृत हो जाएगा।





महाकुंभ 2025: भारतीय ज्ञान परंपरा का खुला विश्वविद्यालय

सत्य, अहिंसा, धर्म, त्याग, तप, परोपकार के साथ अच्छे जीवन उपयोगी संस्कार और संस्कृति से पोषित तथा प्रकृति सम्मत जीवन शैली को महत्व देने वाला भारत का सनातन धर्म सबसे समृद्ध है और वैज्ञानिक भी। शायद ही कोई भारतीय इस विचार से असहमत हो। प्रत्येक बारह वर्षों में भारत के गंगा, यमुना, और सरस्वती नदी के संगम स्थल प्रयागराज पर आयोजित होने वाला कुंभ(2025 में 13 जनवरी से 26 फरवरी तक) करोड़ों हिन्दुओं के लिए, सनातन में विश्वास रखने वाले व्यक्तियों के लिए एक धार्मिक अनुष्ठान, आस्था का मेला, सनातन संस्कृति को विस्तार देने वाला एक आयोजन मात्र नहीं है अपितु **भारतीय ऋषियों की ज्ञान परंपरा के विभिन्न पहलुओं के प्रचार-प्रसार**

तथा वैश्विक पहचान दिलाने का माध्यम है, उन्हें बहुत करीब से जानने, समझने, सीखने तथा आत्मसात करने का “**खुला विश्वविद्यालय**” है। इस महाकुंभ में भी पूर्व कुंभों (**प्रयागराज, हरिद्वार, उज्जैन, नासिक**) की तरह विभिन्न मठ, अखाड़ों, धर्म संगठनों, न्यास आदि द्वारा साधु-संतों, तपस्वियों, धर्मचार्यों और विद्वानों को उनकी संगठनात्मक योग्यता, सनातन धर्म आधारित ज्ञान तथा उसके प्रचार-प्रसार की क्षमता, तप और आध्यात्मिक साधना आदि के आधार पर विविध उपाधियां दी जा सकती है, जैसे- आचार्य महामंडलेश्वर, महामंडलेश्वर, शंकराचार्य, महंत, अवधूत, परमहंस, नागा साधु, वेदांताचार्य, योगेश्वर, धर्म-चक्रवर्ती, तपोनिष्ठ, सिद्ध-योगी, धर्मगुरु आदि। ज्ञान के इस अनोपचारिक शिक्षण संस्थान(कुंभ) में प्रवेश के लिए न तो किसी अर्हतादायी परीक्षा पास होने की बाध्यता है, न ही जाति, धर्म, लिंग, भाषा का बंधन है और न ही धन की आवश्यकता है।

इस शिक्षास्थली से जानार्जन के लिए यदि किसी चीज की आवश्यकता है, तो वह है स्वयं के द्वारा चयनित गुरु के प्रति आस्था, विश्वास और समर्पण। मेरा ऐसा मानना है कि भारतीय ज्ञान परंपरा की इस शिक्षास्थली से जानार्जन करने वाला आम और खास व्यक्ति जीवन उपयोगी लौकिक एवं पारलौकिक विषयों पर सैद्धांतिक एवं प्रायोगिक ज्ञान प्राप्त कर सकता है, देश, समाज और स्वयं की उन्नति की राहें

आसान कर सकता है तथा मानव जन्म को सार्थक बना सकते हैं।

भारतीय ज्ञान परंपरा की दृष्टि से 2025 का महाकुंभ विशेष है और महत्वपूर्ण है। महाकुंभ में कल्पवासी, स्नानार्थी, श्रद्धालु, शिष्य, पर्यटक आदि सभी को साधु-संतों, ऋषि-मुनियों, विद्वानों और दार्शनिकों के श्रीमुख से ईश्वरीय चरित्र, ज्ञान-सत्ता और भक्ति का साक्षात्कार करने, समाज में अपनी भूमिका सुनिश्चित करने, जीवन में खुशियां और शांति प्राप्त करने की विभिन्न पद्धतियों, विचारधाराओं को करीब से देखने, समझने और आत्मसात करने का अवसर प्राप्त हो सकता है। विभिन्न मठ, मंदिर, साधु-संतों के पंडालों आदि में आयोजित होने वाले विचार विमर्श/सत्संग/संगोष्ठी/कार्यक्रम/स्वाध्याय आदि के माध्यम से पूजा-पाठ, भक्ति, उपासना, साधना, यज्ञ, योगासन, प्राणायाम, ध्यान आदि के महत्त्व को जाना जा सकता है तथा इनकी पद्धतियों/विधियों की प्रायोगिक कला को भी सीखा जा सकता है। इतना ही नहीं समाज को एकजुट, उन्नतशील रखने की आवश्यकता से लेकर इन लक्ष्य को प्राप्त करने के तौर-तरीकों, तथा समाज में व्याप्त अंधविश्वास, कुरितियों से होने वाले नुकसान से लेकर उनसे बचने के उपायों तक पर कुंभ के विभिन्न आयोजनों में खुली चर्चा होती है, मार्ग निकलता है।

इसी तरह देश की युवा पीढ़ी पर, राष्ट्र पर, सनातन धर्म पर कौन-कौन से खतरे मंडरा रहे हैं, उनसे कैसे बचा जा सकता है, भारत को विकसित राष्ट्र के साथ पुनः विश्वगुरु कैसे बनाया जा सकता है आदि विभिन्न विषयों पर मंथन और विमर्श इस तरह के आयोजन को न सिर्फ विशिष्ट बनाते हैं, अपितु प्रासंगिक भी बनाते हैं। **कुंभ में होने वाले साधु-संतों एवं धर्मचार्यों के व्याख्यान, प्रवचन, उपदेश और वेदांत चर्चा भारतीय दर्शन को गहराई से समझने में मदद करते हैं।** कुंभ में लगने वाले आयुर्वेद और योग के शिविर न केवल पारंपरिक भारतीय चिकित्सा पद्धतियों को प्रोत्साहित करते हैं, विस्तार देते हैं अपितु लाखों लोगों को स्वास्थ्य लाभ भी उपलब्ध कराते हैं। ज्योतिष और भविष्य वाणियों पर भी इस तरह के आयोजनों में विचार-विमर्श होता है।

वेद, पुराण, गीता, रामायण/रामचरितमानस, उपनिषद, भागवत जैसे अनेकों धार्मिक ग्रंथों में छुपे विभिन्न नैतिक, सामाजिक, आध्यात्मिक, वैज्ञानिक पहलुओं के बारे में आचार्यों, महा-मंडलेश्वरों, धर्मचार्यों, कथावाचकों, विद्वानों आदि से श्रोताओं/श्रद्धालुओं/शिष्यों को रोचक, सरल, सहज और समझ में आने वाली भाषा में प्रमाणिक ज्ञान प्राप्त होता है। सनातनी धार्मिक ग्रंथों के प्रति आस्था बढ़ती है, इनमें समाहित गूढ़ रहस्यों को जानने के प्रति आकर्षण पैदा होता है जो भविष्य में विमर्श और शोध का हेतु बनता है।

कुंभ से विभिन्न विषयों पर प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप प्राप्त होने वाला ज्ञान और शिक्षा मनुष्यों को जीवन जीने की कला और धर्म के व्यावहारिक पक्ष से परिचित कराती है तथा आधुनिक ज्ञान और विज्ञान के प्रति भी जागरूकता पैदा करती है।

पूर्व में आयोजित कुंभ नवाचार, सामाजिक सुधारों और बदलावों का वाहक रहे हैं फिर **चाहे किन्नर समाज के अखाड़े को मान्यता देना हो या फिर किन्नर तथा नारी शक्ति को महामंडलेश्वर के रूप में स्वीकारना आदि हो।**

2025 के कुंभ में भी कई नवाचार देखने और सुनने को मिल सकते हैं।

महाकुंभ जैसे आयोजनों में **सामाजिक एकता और समरसता, लोक कलाओं और लोक संस्कृति** पर केवल चर्चा ही नहीं होती अपितु उसके साक्षात् दर्शन भी होते हैं। विभिन्न जाति, धर्म, भाषा के लोगों को बिना भेद-भाव के स्नान, ध्यान, भोजन, भजन, कीर्तन करते हुए एकसाथ देखा जा सकता है।

कुंभ में गुरुकुल परंपरा को भी करीब से अनुभव किया जा सकता है। यहां संत और महात्माओं को अपने शिष्यों को वाचिक परम्परा के माध्यम से वेद, उपनिषद, योग, आयुर्वेद और शास्त्रों आदि के ज्ञान को सहजता से स्थानांतरित करते हुए देखा जा

सकता है।

महाकुंभ 2025 में पर्यावरण प्रदूषण, सांस्कृतिक प्रदूषण, जलवायु परिवर्तन और नदी संरक्षण जैसे आधुनिक मुद्दों तथा विभिन्न सामाजिक विषयों पर भी चर्चा होने की संभावना है। पिछले **उज्जैन कुंभ में भी 'विचार कुंभ' का आयोजन किया गया था,** जिसमें विद्वान, आचार्य, धर्माचार्यों, महामंडलेश्वरों आदि ने विभिन्न समसामयिक विषयों पर अपने विचार रखे, जिसे श्रोताओं ने बहुत सराहा।

डिजिटल क्रांति के युग में महाकुंभ का स्वरूप भी बदल रहा है। 2025 में आयोजित हो रहे महाकुंभ में **डिजिटल तकनीक और माध्यमों के साथ-साथ आधुनिक एआई (AI) तकनीक का उपयोग कर देश-विदेश के करोड़ों लोगों को इससे जोड़े जाने की संभावना है।** मेले के प्रबंधन, प्रतिभागियों को सुरक्षा और सुविधा उपलब्ध कराने में, भारत की सांस्कृतिक और बौद्धिक विरासत को वैश्विक स्वरूप प्रदान करने में भी डिजिटल तकनीक के बढ़-चढ़कर उपयोग होने की संभावना है। ऑनलाइन मंचों से लाइव स्ट्रीमिंग, वर्चुअल चर्चाएं, और डेटा विश्लेषण भी इस वर्ष के महाकुंभ में आकर्षण का केंद्र हो सकते हैं।

कुंभ जैसे आयोजन विश्व को सर्वधर्म समभाव के साथ **"वसुधैव कुटुंबकम्"** का संदेश देते हैं।

भारत की भूमि में आयोजित होने वाले इस तरह के आयोजन यह समझाने में भी सफल होते हैं कि अध्यात्म और विज्ञान एक दूसरे के विरोधी नहीं, बल्कि पूरक हैं। दोनों मिलकर मानवता को नई दिशा दे सकते हैं। भारतीय ज्ञान केवल अतीत की धरोहरों तक सीमित नहीं है, बल्कि भविष्य के लिए भी प्रकाश पुंज है।

निष्कर्ष रूप में हम कह सकते हैं कि महाकुंभ केवल एक धार्मिक आयोजन नहीं, बल्कि भारतीय ज्ञान परंपरा की ओपन यूनिवर्सिटी है, जो हर स्तर के व्यक्तियों के लिए ज्ञान के भण्डार में से कुछ सीखने, समझने, और आत्मसात करने का मंच प्रदान करती है। इस तरह के आयोजन न केवल भारत की प्राचीन विरासत को जीवित रखे हुए है, बल्कि आधुनिक समाज को भी प्रेरणा देते हैं। महाकुंभ 2025 सनातन गुरुकुल परंपरा, आधुनिक ज्ञान, विज्ञान, और अध्यात्म तीनों को एक साथ लाने वाला अद्भुत मंच है, जहां प्राचीन और आधुनिक विचारधाराएं एक दूसरे के साथ सामंजस्य स्थापित करती दिखाई देने वाली है। मुझे संगम तट पर आयोजित हो रहा भव्य और दिव्य महाकुंभ का आयोजन सनातन ज्ञान, धर्म, लोककला, संस्कार, संस्कृति, परंपरा और मूल्यों से वैश्विक मानव समाज को परिचित कराने के खुले विश्वविद्यालय के रूप में नजर आ रहा है।

- डॉ. मनमोहन प्रकाश जी, अध्यक्ष शास्त्री निकाय, शासकीय होलकर विज्ञान महाविद्यालय, इंदौर (म.प्र.)

LOOKING FOR CREATIVE TALENTS?



**“We Love Being Creative
You Love Results
So We Focus On Both”**

WHY YOU NEED US? WE DESIGN YOUR DREAM....

Unleash creativity beyond limits with our innovative solutions at MX Creativity. Where ideas take flight, and visions come to life, we redefine possibilities in the world of design and innovation.

WEB DESIGN & DEVELOPMENT



Elevate your online presence with our expert Web Design and Development services – where innovation meets seamless functionality for a captivating digital experience.

APPS DESIGN & DEVELOPMENT



Transform ideas into interactive reality with our cutting-edge mobile app development. Amplify your reach and engagement through strategic marketing that propels your app to success in the digital landscape.

PRINT DESIGN & BRAND IDENTITY



Bring your brand to life on paper with our dynamic print media solutions. Elevate your identity through impactful branding that leaves a lasting impression in the tangible world.



भारतीय हिंदू संस्कृति, परंपराओं एवं सनातन धर्म में महाशिवरात्रि के पर्व का अत्यधिक महत्व है। इस दिन भगवान शिव की विशेष पूजा एवं आराधना की जाती है। हमारे देश के सांस्कृतिक मान्यता के अनुसार 33 करोड़ देवी देवताओं में भगवान श्री शिव शंकर को ही सर्वशक्तिमान, सर्व व्यापक एवं सभी देवी देवताओं का देव माना जाता है। **महादेव सोग्य एवं रौद्र दोनों ही रूप हैं।**

माना जाता है कि सृष्टि की उत्पत्ति एवं संहार के अधिपति भगवान शिव है। त्रिदेवों में **भगवान शिव संहार के देवता** माने गए हैं। यद्यपि शिव का अर्थ कल्याणकारी माना गया है, लेकिन लय एवं प्रलय दोनों ही उनके अधीन हैं, अर्थात् सृष्टि की उत्पत्ति एवं विनाश दोनों ही महादेव के अधीन है। **त्रिदेव ब्रह्मा विष्णु और महेश तीनों ही शिव रूप हैं।** आकाश और पाताल तीनों लोक के आदि देव

महादेव ही हैं।

"शिव का शाब्दिक अर्थ होता है- कल्याण एवं रा का अर्थ है- दानार्थ धातु, इन्हीं दोनों के मेल से **"शिवरात्रि"** शब्द बना है जिसका अर्थ है वह रात्रि जो सुख एवं कल्याण देती है। मान्यता है कि **सृष्टि का प्रारंभ इसी दिन से हुआ था।"**

शिव पुराण में उल्लेखित एक मान्यता यह भी है कि **भगवान शिव का विवाह देवी पार्वती के साथ इसी दिन हुआ था।** महाशिवरात्रि के दिन ही भगवान महादेव वैराग्य को त्याग कर गृहस्थ जीवन में माता पार्वती के साथ विवाह करके प्रवेश किया था। भगवान महादेव के भक्त शिवरात्रि के दिन को विवाह के उत्सव की तरह मनाते हैं। भगवान शिव को मानने वालों के अनुसार जिस कन्या अथवा युवक का विवाह संपन्न नहीं हो रहा है अथवा विवाह में कोई बाधा आ रही है ऐसे कन्या एवं युवक को भगवान श्री शिव शंकर की पूजा अर्चना करनी चाहिए एवं सोमवार के दिन भगवान शिव शंकर के लिए व्रत उपवास रखकर विधि विधान से उनकी पूजा करनी चाहिए ऐसा करने से जल्द से जल्द विवाह कार्य संपन्न हो जाता है। अविवाहित युवक एवं युवतियों को भी भगवान शिव की आराधना करने से योग्य जीवनसाथी की प्राप्ति होती है।

महाशिवरात्रि का व्रत करने से सुहागन स्त्रियों के वैवाहिक जीवन में खुशियां आती हैं एवं

उनका सुहाग अखंड रहता है एवं जो व्यक्ति इस दिन विधि विधान से महादेव की पूजा अर्चना करते हैं उनका अभिषेक करते हैं वे व्यक्ति काम क्रोध मद लोभ आदि के बंधनों से मुक्त हो जाते हैं।

व्रत एवं पूजन विधि -

- प्रातःकाल को स्वच्छ होकर धुले वस्त्र धारण करें, फिर पूजा करने से पहले अपने माथे पर त्रिपुंड लगाएं। इसके लिए चंदन को तीनों उंगलियों पर लगाकर माथे के बायीं तरफ से दायीं तरफ की तरफ त्रिपुंड लगाएं।

- श्रद्धा सहित व्रत रखकर मंदिर में अथवा घर पर ही शिव पार्वती की पूजा करें एवं स्वस्ति-पाठ करें, स्वस्ति-पाठः -

"स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः, स्वस्ति ना पूषा विश्ववेदाः, स्वस्ति न स्तारक्ष्यो अरिष्टनेमि स्वस्ति नो बृहस्पति र्दधातु।"

- पत्र, पुष्प तथा सुन्दर वस्त्रों से मंडप तैयार करके वेदी बनाकर उस पर जल भरकर कलश स्थापित करके कलश पर शिव-पार्वती की स्वर्ण प्रतिमा और नंदी की चांदी की प्रतिमा स्थापित करनी चाहिये। यदि मूर्ति न बन सके तो मिट्टी से शिवलिंग बना ले। इस पर चंदन का लेप करें। उसके बाद गोबर के उपले अथवा लकड़ी, घी, तिल, चावल आदि से हवन करें।

- गंगाजल, बिल्व पत्र, पान, सुपारी, लौंग, इलायची, पुष्प, रोली, मोली, चावल, चन्दन, दूध, दही, घी, शहद, कमल गुहा, धतूरे के फल, आक के फल, पुष्प पत्र का भोग शिवजी को अर्पित करके पूजन करें।

- यदि आप रुद्राभिषेक अथवा, लघु रुद्र, महारुद्र का विशेष अनुष्ठान कर रहे हैं, तब **नवग्रह, कलश, षोडश- मातृका** का भी पूजन करना चाहिए। मान्यता है कि इस दिन रुद्राभिषेक करने से भगवान शंकर की कृपा होती है।

- **महादेव के गले में विराजमान सर्प का भी लघु पूजन करें।** विधि विधान से पूजा संपन्न कर व्रत कथा जरूर सुनें।

- महाशिवरात्रि व्रत में चारों पहर में पूजन किया जाता है। संभव हो तो इस दिन शिव मंदिर जरूर जाएं। व्रत करने वाले व्यक्ति को रात्रि में भी शिवजी का भजन करके जागरण करना चाहिए। इस दिन पति पत्नी को एक साथ शिवजी की पूजा करनी चाहिए। रात्रि भर जागरण में महामृत्युंजय मंत्र का जाप करें -

"ॐ त्रयम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ॥"

- अंत में जागरण के पश्चात व्रत खोलें।

- **रुचि गोस्वामी जी, बीकानेर (राजस्थान)**



भारतीय परम्परा™

Let's together discover our Tradition, Culture & Heritage



www.bhartiyaparampara.com